Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा : संभावनाएँ और सीमाएँ

[1]डॉ. शेख बुशरा शफी अहेमद*
राजीव गांधी महाविद्यालय ,मुद्खेड जि.नांदेड

[2]डॉ. सय्यद वाजिद सय्यद
जीवन पीपल्स महाविद्यालय नांदेड

शोध सार

तकनीकी उन्नति के इस दौर में कृत्रिम मेधा ने भाषा और साहित्य के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए है | वर्तमान युग सूचना तकनीक और डिजिटल नवाचारों का युग हैं | कृत्रिम मेधा ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र कों प्रभावित किया है | हिंदी भाषा शिक्षण भी इससे अछुता न रहा | हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा का प्रयोग एक नया दृष्टिकोन प्रस्तुत करता है | जिसमें भाषा विज्ञान, साहित्य, कम्प्युटर विज्ञान, संचार अध्ययन और समाजशास्त्र का समन्वय दिखाई देता है | यह शोध पत्र हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा की भूमिका का अध्ययन करता है तथा इसके भविष्य की संभावनाओं, चुनौतियों तथा सीमाओं पर प्रकाश डालता है |

बीज शब्द: *कृत्रिम मेधा, हिंदी भाषा, तकनीकी, डिजिटल साहित्य, टूल्स, प्लेटफार्म*

Received: 02/12/2025
Accepted: 17/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ. शेख बुशरा शफी अहेमद
Email: sbushra313@gmail.com

प्रस्तावना :

भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में पहचाने जानेवाली हिंदी भाषा केवल राष्ट्रभाषा के रूप में ही नहीं बल्कि भारत की सांस्कृतिक सामाजिक और साहित्यिक धरोहर है | हिंदी भाषा को सीखने के लिए आदिकाल से आजतक कई पद्धतियाँ परिवर्तित होती रही है | परंपरागत अध्ययन पद्धतियों के साथ साथ हिंदी भाषा शिक्षण के डिजिटल और तकनीकी माध्यमों के कारण एक नया आयाम मिला है | कृत्रिम मेधा (AI) एक ऐसी तकनीक है जिसमें वह मनुष्य के क्षमताओं के समान जैसे, किसी विषय को लेकर सीखने, उस विषय का विश्लेषण करना, निर्णय लेना और कुछ हद तक सृजन प्रक्रिया भी करने का अनुकरण करती है | इस शोध पत्र का उद्देश हिंदी भाषा शिक्षण को कृत्रिम मेधा अधिक व्यापक, वैज्ञानिक और प्रभावी किस प्रकार से बना रही है यह स्पष्ट करना है |

कृत्रिम मेधा के आधारित अप्लिकेशन और डिजिटल प्लेटफार्म हिंदी भाषा को सीखने को सरल और प्रभावी बना रहे हैं | उचारण में सुधार, व्याकरण का अभ्यास, शब्द भंडार में वृध्दि जैसे कार्य कृत्रिम मेधा के माध्यम से संभव हो रहे है | भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा ने नई संभावनाएँ उत्पन्न की है | कृत्रिम मेधा आधारित तकनीकी भाषा सीखने की प्रक्रिया को अधिक रोचक, सरल और प्रभावी बनाती है | छात्र अपनी क्षमतानुसार डिजिटल माध्यम से भाषा को ग्रहण कर सकते हैं | उनकी गति अनुसार वे भाषा का अभ्यास कर सकते हैं | उच्चारण की क्षमता एवं सुधार, व्याकरणीक गलतियाँ, नयी शब्दावली का विस्तार और सुनने, बोलने के कौशल को भी अवगत एवं विकसित करने में कृत्रिम मेधा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है |

कृत्रिम मेधा पर आधारित टूल्स त्वरित प्रतिक्रिया और व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जिस कारण शिक्षण अधिक छात्र केंद्रित बनता है | हिंदी भाषा का लक्ष्य छात्रों को केवल भाषा का ज्ञान देना नहीं, बल्कि उन्हें भाषा के माध्यम से सोचने, समझने और अभिव्यक्त करने में सक्षम बनाना है | इसको और अधिक प्रभावी ढंग से कृत्रिम मेधा के माध्यम से बनाया जा सकता है | हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेंधा के प्रयोग से मातृभाषा में शिक्षा को बढावा मिलता है तथा दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण भाषा शिक्षा पहूँचाई जा सकती है | कृत्रिम मेधा का प्रयोग कर आज का आधुनिक शिक्षक हिंदी भाषा शिक्षण को अधिक प्रभाव ढंग से सिखा सकता है | कृत्रिम मेधा आज की आधुनिक युग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है किंतु इसका यह

अर्थ नहीं है, कि यहाँ शिक्षक की भूमिका समाप्त हो जाएगी फिर भी कृत्रिम मेधा यह सहायक के रूप में हिंदी भाषा शिक्षण को आधुनिक, सुलभ और प्रभावशाली बनाने में सहायक सिद्ध होती है |

हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा की संभावनाएँ :

हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा एक क्रांतिकारी और परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभर कर सामने आयी है | जो सीखने, बोलने के अनुभव को अधिक व्यक्तिगत बनाकर प्रभावी ढंग से सुलभ बनाने की क्षमता रखती है | किंतु कृत्रिम मेधा की प्रभावशीलता की भी कुछ संभावनाएँ भी है और कुछ हद तक सीमाएँ भी है | पहले हम कृत्रिम मेधा में हिंदी भाषा शिक्षा की संभावनाओं को देखते हैं | -

संभावनाएँ :

(1)व्यक्तिगत शिक्षण पर जोर :

हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा व्यक्तिगत शिक्षण प्रदान करती है | कृत्रिम मेधा प्रत्येक छात्र को अपने क्षमता नुसार तथा गति नुसार सीखने की सामग्री प्रदान करती है | प्रत्येक छात्र के गतिनुसार तथा शैली के अनुसार शिक्षण की सामग्री को ढाल सकती है | छात्र अगर किसी क्षेत्र में कमजोर है तो उस छात्र को विशेष अभ्यास प्रदान करती है | जिससे छात्र अपनी व्यक्तिगत पहचान बना सकते हैं और सीख सकते हैं | इससे शिक्षा अधिक छात्र केंद्रित बनती है |

(२)संवादात्मक शिक्षण उपकरण :

कृत्रिम मेधा के उपकरणों का उपयोग कर शिक्षक और छात्र संवादात्मक शिक्षण से भाषा कौशल को मजबूत कर सकते हैं | छात्र के विचारों को सुनकर शिक्षक भी उनके विचारों पर मिलकर काम कर सकते हैं और नयी अवधारणाओं को गहराई से समझ सकते हैं | हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा के विविध संवादात्मक शिक्षण उपकरणों जैसे, Google meet, Zoom, Kahoot, google Classroom, Nearpod classsodo, Edmodo, Buncee, Padlet आदि जैसे उपकरण शैक्षिक उपकरणों का उपयोग कर शिक्षक और छात्रों के संबंध स्थापित कर रहे है |

(३)वास्तविक समय में प्रतिक्रिया और मूल्यांकन :

वास्तविक समय में प्रतिक्रिया और मूल्यांकन का मतलब है किसी भी कार्य करते समय या सीखते समय की प्रक्रिया के दौरान ही तात्काल जानकारी देना या उसमें सुधार की जानकारी या सुझाव देना है | जिससे छात्र या कोई भी व्यक्ति तुरंत अपनी गलतियाँ सुधार सकें और अपनी समझ को विकसित कर सकें | कृत्रिम मेधा के माध्यम से यह संभव हो रहा है | इसे आसान बनाने के लिए कुछ ऑनलाईन टूल्स है जैसे Nearpad, Socrative आदि जिससे सीखने का अनुभव अधिक संवादात्मक और प्रभावी बनता है |

(४)तकनीकी शिक्षण सहाय्यक सामग्री :

अब हिंदी भाषा शिक्षण में भी कृत्रिम मेधा का उपयोग कर पाठ, क्विज़ और असाइनमेंट जैसी शिक्षण सामग्री की सहायता लेकर बनाया जा सकता है | इसके उपयोग से शिक्षकों के समय की बचत होती है और छात्रों को व्यक्तिगत रूप से बेहतर रूप से सीखने की प्रक्रिया सुलभ एवं प्रभावशाली बनती है | जो भी जटिल विषय है उसे समझने में आसानी हो और पाठ अधिक आकर्षक बनता है ऐसे कुछ टुल्स है – जैसे Kahoot, Nearpad और 3D मॉडल इनके उपयोग से जटिल विषयों को आसानी में बदला जा सकता है |

(५)स्पष्टोच्चारण एवं व्याकरणिक शुध्दता :

आज के आधुनिक युग में परंपरागत माध्यमों के अलावा कृत्रिम मेधा का उपयोग कर हिंदी भाषा शिक्षण में भाषा के व्याकरणिक शुद्धता और स्पष्ट उच्चारण को अधिक सुक्ष्मता से सुधारा जा रहा है | अब भाषा की व्याकरणिक शुद्धता और स्पष्टता को सुधारणा बहुत ही आसान हो गया है | कृत्रिम मेधा के विभिन्न टुल्स का जैसे QuillBot X Language too का उपयोग कर विराम चिन्हों को ठीक कर सकते हैं जो हिंदी भाषा सहिल अनेक भाषाओं का समर्थन करता है | इसके अलावा Speechify X Elevenlabs इस टूल्स का उपयोग कर किसी भी हिंदी टेक्स्ट को सही उच्चारण में सुन सकते हैं, Google's Pronunciation का उपयोग कर उच्चारण के दौरान शब्दों के उच्चारण का विश्लेषण करते हैं, ऐसे अनेक टुल्स का उपयोग कर स्पष्टोच्चारण और व्याकरणिक शुध्दता को कृत्रिम मेधा के माध्यम से प्रभावी और आसान बनाना हो गया है |

(६)सामग्री सृजन एवं अनुवाद :

हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा का उपयोग कर सामग्री सृजन जैसे कहानी, कविता, निबंध और विभिन्न प्रकार के पाठ तयार किए जा सकते हैं जिससे हिंदी भाषा सिखने की प्रक्रिया मनोरंजक एवं प्रभावी हो जाती है | न्यूरल मशील ट्रांसलेशन के माध्यम से अन्य भाषाओं की सामग्री को हिंदी में और हिंदी को अन्य भाषाओं में आसानी से अुनवाद किया जा सकता है |

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा की सीमाएँ :

हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा का उपयोग कर हिंदी भाषा नए अवसर प्रदार कर रही है और नए विकसित भावी भारत की ओर अपने कदम जमा रही है | किंतु हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा के बढ़ते उपयोग के बावजूद इसकी कई महत्वपूर्ण सीमाएँ है जो मानवीय पूर्ण शिक्षक बनने के विकल्प से रोकती भी है | हिंदी भाषा शिक्षण के संदर्भ में कुछ मुख्य सीमाएँ निम्न रूप से देख सकते हैं | -

(१)मानवीय संपर्क और भावनात्मकता :

कृत्रिम मेधा का उपयोग कर मनुष्य अनेक विषम एवं जटिल विषयों को आसानीमें तब्दील कर सकता है | किंतु तकनीक का प्रयोग कर मानवीय संवेदनाओं तथा भावनात्मक जुड़ाव को नहीं समझ सकता | यह काम केवल शिक्षक से ही हो सकता है | क्योंकि वह छात्रों को समझकर उनके मानसिक स्तर, उत्साह और आत्मविश्वास को समझकर शिक्षण विधि में बदलाव कर सकते हैं | जबकि कृत्रिम मेधा केवल पूर्व-निर्धारित प्रोग्राम पर काम करता है |

(२)डिजिटल उपकरणों का अभाव :

कृत्रिम मेधा का उपयोग करना वह भी भारत जैसे देशों में ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और आधुनिक उपकरणों की कमी है | कृत्रिम मेधा आधारित हिंदी भाषा शिक्षण प्रणालियों का उपयोग करने के लिए सक्षम उपकरणों का होना भी आवश्यक है | यहाँ पर उपकरणों के अभाव में छात्र, विशेष रूप से वंचित समूहों के तकनीकी रूप से पिछड जाते है |

(३)तकनीकी और कौशल अंतराल :

हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा का उपयोग कर शिक्षा क्षेत्र में एक बडे बदलाव के रूप में उभरी है, लेकिन इसके साथ ही तकनीक और कौशल का अंतर भी तेजी से उभर रहा है | शिक्षक को कृत्रिम मेधा क्या है ? इसकी जानकारी हैं, किंतु कृत्रिम मेधा के अंतर्गत जो विभिन्न टुल्स आते हैं उनको इसका ज्ञान पूर्ण रूप से नहीं है | शिक्षक को व्यावहारिक तौर पर हिंदी भाषा शिक्षण के परंपरागत पध्दतियों का तो ज्ञान है किंतु तकनीक से भाषा कौशल सीखाने तथा सीखने का ज्ञान पूर्ण रूप से नहीं है | साथ ही साथ जितने भी कृत्रिम मेधा के उपकरण है वह अंग्रेजी में है जिस कारण वश क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्र या शिक्षक के लिए एक अंतर पैदा हो रहा है |

(४)डेटा गोपणीयता और नैतिक मुद्दे :

हिंदी भाषा शिक्षण में कृत्रिम मेधा का उपयोग जहाँ सीखने और सीखाने की प्रक्रिया को व्यक्तिगत, सुलभ और आकर्षक बना रहा है वहीं यह डेटा गोपणीयता और नैतिक मुद्दे जैसी चुनौतियों को पेश करता है | कृत्रिम मेधा टुल्स जैसे, चैटबॉट, ChatGpt आदे छात्रों से बड़ी मात्रा में डेटा एकत्र करती है, जिसमें व्यक्तिगत डेटा नाम, उम्र आदि शामिल है | यदि इन प्लेटफार्म्स की सुरक्षा कमजोर है, तो छात्रों का संवदेनशील व्यक्तिगत डेटा लीक हो सकता है | अक्सर छात्रों को या उपयोग कर्ता को पता नहीं होता है कि उनका डेटा कैसे और कहाँ संग्रहीत किया जा रहा है |

हिंदी भाषा शिक्षण में हम नैतिक मुद्दो की अगर बात करे तो कृत्रिम मेधा यदि अनुचित या असंतुलित डेटा पर प्रशिक्षित है, तो वे हिंदी की विविधता को कम कर सकते हैं | साथ ही साथ कृत्रिम मेधा शिक्षक भाषा की भावनात्मक समझ या सांस्कृतिक बारीकियों को मानव शिक्षक के समान नही समझ सकते हैं |

(५)सुक्ष्म भाषा और सांस्कृतिक संदर्भ :

सुक्ष्म भाषा का अर्थ है शब्दों के शाब्दिक अर्थ से परे जाकर उनके भावार्थ, (टोन) लहजा और भावना को समझना | 'सुक्ष्म भाषा' के साथ 'सांस्कृतिक संदर्भ' को भी समझना जरूरी है | कृत्रिम मेधा की सटीकता और मानवीय संवाद को समझने की क्षमता को यह दोनो पहलू निर्धारित करते हैं | केवल शाब्दीक अनुवाद या डेटा पर्याप्त नहीं है | कृत्रिम मेधा को अब सुक्ष्म भाषा के साथ सांस्कृतिक बारीकियों को भी समझना अनिवार्य है | कृत्रिम मेधा अक्सर मुहावरों, व्यंग्य और कठबोली को पकडने में संघर्ष करते हैं, जो उनके शाब्दिक अर्थ से भिन्न हो सकते हैं | उसी के साथ सांस्कृतिक बारीकियों को ध्यान में रखना पड़ता है | एक संस्कृति में जो मजाक है वह दूसरी संस्कृति में अपमानजनक हो सकता है |

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं, कि कृत्रिम मेधा हिंदी भाषा शिक्षण के लिए एक वरदान साबित हो सकती है, यदि इसका सही तरीके से उपयोग किया जाए | भविष्य कें शिक्षा प्रणाली में मानव शिक्षक और कृत्रिम मेधा का मिश्रित रूप ही सबसे प्रभावी होगा | जहाँ कृत्रिम मेधा तकनीकी सहायता प्रदान करेगा और शिक्षक भावनात्मक मार्गदर्शन देंगे | कृत्रिम मेधा हिंदी भाषा शिक्षण में एक अनमोल उपकरण है जो पारंपारिक कक्षा के साथ मिलकर सामंजस्य स्थापित कर सकता है और बेहतर परिणाम भी दे सकता है | हालाँकी यह मनुष्य की बराबरी नहीं कर सकता किंतु

सहायक रूप में हिंदी भाषा को सीखने के लिए अधिक सुलभ, समावेशी और प्रगतीशील बना सकता है | कृत्रिम मेधा तकनीक में लगातार हो रहे सुधारों के साथ भविष्य में यह हिंदी भाषा शिक्षण के सुरक्षा और प्रचार-प्रसार में 'खेल परिवर्तक' के रूप में साबीत हो सकता है |

संदर्भ ग्रंथ :

1)आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और भाषा का विकास, डॉ.अनिल कुमार, हिंदी साहित्य संस्थान, २०२०

2)भाषा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव, लेखक : डॉ. प्रियंका गुप्ता, शारदा पल्बिशर्स, २०२१

3)ETV Bharat Hindi Team (2024 July 22) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उदय : संभावनाए और चुनौतियाँ, https://wwwetvbharat.com./hi/opinion/the-rise of artificial - intelligence.prospects – and – challenges – hin24072202608.

4)ए.आई.एंड इंडियन लॅंग्वेज कुमार ए, न्यू दिल्ली सेज पब्लिकेशन २०२२

5)Google AI Blog, (n.d.) http://AIgoogleblog.com/open AI (n.d) Research Papers http://AI.googleblog.com/research kunchukutam A.& Bhattacharya p.(n.d.) Indic NLP Project

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)